ॐ

किए जा काम अपना ऐबजोई को न कर परवा
ये दुनिया है इसे तनक़ीस ही से काम रहता है

श्रद्धा सुमन

'भजनावली'

आठवाँ काव्य संग्रह

गुलहाए अक़ीदत

"नात व सलाम"

1998

रचयिता

नब्बाज़े फ़ितरत

इमतियाज़े तालिब

नूर कोहली अकबराबादी

ॐ

किए जा काम अपना ऐबजोई को न कर परवा
ये दुनिया है इसे तनक़ीस ही से काम रहता है

श्रद्धा सुमन

'भजनावली'

आठवाँ काव्य संग्रह

गुलहाए अक़ीदत

"नात व सलाम"

1998

रचयिता
नब्बाज़े फ़ितरत
इमतियाज़े तालिब
नूर कोहली अकबराबादी

परिचय

नाम मुसन्निफ़	:	नूर कोह्ली
शार्गिद	:	जनाब अब्र एहसनी गुन्नौरी
वतन	:	भारत
पैदाइश	:	१६ मार्च १६१६
प्रकाशक	:	अश्वनी कुमार कोह्ली
प्रिंटिंग प्रेस	:	मून प्रेस
छपने का साल	:	१६६८
पहली बार	:	४०० प्रतियाँ
क़ीमत	:	रु० ३०/-

पुस्तक मिलने के पते—

१. नूर कोह्ली-३३/१५६ जटपुरा, आगरा-२

२. सर्वे स्पोर्ट्स-नूरी दरवाज़ा, आगरा-२

समर्पित

१. भगवान श्री कृष्ण के चरणों में जिनकी कृपा से
मैं ग़ज़ल कहने वाला भजन भी कह सका

२. हज़रत इमाम हुसैन जिन के प्यार ने मुझे
सलाम कहने की प्रेरणा दी

नूर कोहली
अकबराबादी

-: देव वाणी :-

खुशबुओं की फुहार हो भजनावली तिरी
तख़लीक़े सद बहार हो भजनावली तिरी

ऐहले ज़मीन में न फ़क़त मोतबर रहे
तारों में भी शुमार हो भजनावली तिरी

हो शेर शेर इसका सितारों का हमज़ुबाँ
बेदाग़ नूरो नार हो भजनावलो तिरो

मीरा का दर्द इसमें हो रसखान की महक
भक्ति की राज़दार हो भजनावली तिरी

जादू हर एक शेर में हो मेघदूत सा
गुलज़ारे पुरबहार हो भजनावली तिरी

राधा का रंग हो कहीं तो कृष्ण का कहीं
रागों में तो मल्हार हो भजनावली तिरो

भजनों के इन्तखाब पे ऐसी नज़र रहे
ऐ 'नूर' शाहकार हो भजनावली तिरी

भजन

1

8-2-98

हमें जानो दिल से है प्यारा कन्हैया
दुलारा है आंखों का तारा कन्हैया

भले तीनों लोकों से न्यारी हो मथुरा
मगर मथुरा से भी है न्यारा कन्हैया

है कहने को तो नन्द गाँओं का ग्वाला
है ब्रज वासियों का दुलारा कन्हैया

रचाए कभी रास वो ग्वालिनों में
कभी काट जाए किनारा कन्हैया

सखा हो कि सुखिया कि हों दीन दुखिया
वो है हर किसी का सहारा कन्हैया

सखा भी है रक्षक भी भगवान् भी है
हमारा कन्हैया हमारा कन्हैया

कहें बृन्दाबन की सभी कुंज गलियाँ
छुपा है यहीं अब भी प्यारा कन्हैया

ये मथुरा के दीवारो दर बोलते हैं
दुलारा है जाने-नज़ारा कन्हैया

पुकारा अगर दिल से ऐ 'नूर' तुम ने
तुम्हारी सुनेगा तुम्हारा कन्हैया

भजन

2

9-2-98

यशोधा के पाले की याद आ रही है
हमें बन्सी बाले की याद आ रही है

कभी जो चराता था गोकुल में गौएँ
उसी नन्हे ग्वाले की याद आ रही है

यशोधा के आँगन में आलख निरंजन
हमें उस शिवाले की याद आ रही है

जो कूदा था यमुना में नथने को काली
उसी कृष्ण काले की याद आ रही है

दिया ज्ञान अर्जुन को रथ-बान बनकर
हमें उस निराले की याद आ रही है

हमें देख कर आज भारत की हालत
फिर उस बन्सी बाले की याद आ रही है

अंधेरों ने जब खा लिया सर से पा तक
हमें 'नूर' उजाले की याद आ रही है

भजन

3

10-2-98

हुआ आज गुमराह भारत बहुत है
श्री कृष्ण तेरी ज़रूरत बहुत है

नहीं कोई रस्ता नहीं कोई मंज़िल
नहीं कोई नीती-सियासत बहुत है

असर कोई गीता का लेना न चाहे
लियाक़त तो कम है जहालत बहुत है

नुमायाँ हैं बरबादियों ही के सामाँ
शराफत तो कम है दिनायत बहुत है

नहीं नाम को भाईचारा कहीं भी
मगर भाई-चारे की शोहरत बहुत है

कहाँ हैं दयानंद जैसे सुधारक
खराब आज भारत की हालत बहुतहै

कहो 'नूर' खुलकर ये हरइक के मुंह पर
मुहब्बत बहुत कम है नफ़रत बहुत है

भजन

4 12-2-98

पड़े कोई मुशकिल श्री कृष्ण कहना
नहीं होना बेदिल श्री कृष्ण कहना

खैवय्या बनेगा वो नय्या बनेगा
बनेगा वो साहिल श्री कृष्ण कहना

श्रद्धा से भक्ति से जपना हरी को
जो उभरें मसाइल श्री कृष्ण कहना

वो आएगा हर दर्द का बन के दरमाँ
अगर दिल हो बेदिल श्री कृष्ण कहना

कफ़ालत का ज़ामिन है सिमरन प्रभू का
सदा रहना माइल श्री कृष्ण कहना

हों खुशियाँ तो एहसानमंद उसका होना
जो ग़म हों मुक़ाबिल श्री कृष्ण कहना

ग़ज़ल ख़ानियाँ उम्र भर 'नूर' कर लीं
बदल अब रहे-दिल श्री कृष्ण कहना

भजन

5

12-2-98

तक़ाज़ा है अब वक्त का नाम, जप ले
श्री कृष्ण जप ले, श्री राम जप ले

ज़रूरत है अब बादाए मार्फ़त की
चढ़ा जाम पर जाम और नाम जप ले

ज़रूरी है सिमरण का ज़ादे सफ़र भी
कभी राम जप ले, कभी श्याम जप ले

वो शक्ति का दाता, वो मुक्ति का दाता
हैं दोनों ही ब्रह्म ज्ञान के नाम, जप ले

ये मरयाद स्वामी हैं वो कूटनीतिक
मिलेंगे ये दोनों ही बेदाम, जप ले

वो है नाम मुरली मनोहर का जिस से
निकलना है तेरा हर इक काम जप ले

नहीं ज़िन्दगी भर जपा 'नूर' उस को
है अब ज़िन्दगी की हुई शाम जप ले

भजन

6

13-2-98

रचा कर प्रभू अबला नारी की लीला
मिटा दो 'शकुन' जैसे जुआरी की लीला

जब आते थे 'सुर' मथुरा दरशन को लोगो
वो थी तीन लोकों से न्यारे की लीला

छिनी पोटली जब तो झेंपे सुदामाँ
समझते वो कैसे मुरारी की लीला

चलो वृन्दाबन देखें सावन की रुत में
श्री कृष्ण बाँके बिहारी की लीला

जिसे देखने को उमड़ती है दुनिया
वो है कृष्ण से रासधारी की लीला

दिया था जब उपदेश अर्जुन को रण में
वो थी दीदनी चक्रधारी की लीला

कोई दीदावर हो तो ऐ 'नूर' देखें
कृष्ण और उसके पुजारी की लीला

भजन

7

14-2-98

बचा मुझ को कीने से मुर्ली मनोहर
लगा अपने सीने से मुर्ली मनोहर

तुझे पूजना चाहता हूं मैं निसदिन
मैं अपने क़रीने से मुर्ली मनोहर

मुझे बख्श दे श्रद्धा भक्ति की दौलत
तू अपने ख़ज़ीने से मुर्ली मनोहर

मेरे दिल की अगुशतरी को सजा दे
दया के नगीने से मुर्ली मनोहर

तिरे दीद की तृष्णा मुशकिल है मिटनी
ये दो घूंट, पीने से मुर्ली मनोहर

नहो प्यार जिस में न हो भाई-चारा
बचा ऐसे जीने से मुर्ली मनोहर

टपकती है मक्रो रिया जालसाज़ी
हर इक के पसीने से मुर्ली मनोहर

गज़ब्र ढा रहा है ये क्या 'हफ़्त-अफ़लाक'
पिछले महीने से मुर्ली मनोहर

अता 'नूर' को भी हो दो घूंट अमृत
तिरे आब-गीने से मुर्ली मनोहर

भजन

8

14-2-98

जो कीं गोपियों ने कन्हैया की बातें
तो शरमा गईं सुन के मैया की बातें

करो रात दिन अपनी नैय्या की बातें
कभी तो हों उसके खवैय्या की बातें

वो युग और था सुलहो जंग और ही थी
कहाँ अब वो तीरों की छैय्या की बातें

अजब ढंग से मुसकराते थे मोहन
वो जब सुनते थे दाऊ भैय्या की बातें

है इक मशअ़ले राह इस दौर में भी
स्यासत भरी वो कन्हैय्या की बातें

वो ऐसा था भोला जिसे भूलती थीं
न यमुना न गैय्या न मैय्या की बातें

थीं गिरधर की बातों में रमज़ें ही रमज़ें
हों ज्यूं 'नूर' तेरे सवैया की बातें

भजन

9 14-2-98

ये गीता में समझा गया है कन्हैया
कि शब्दों में ख़ुद आ गया है कन्हैया

करम का धरम का है मुक्ती का रसता
जो गीता में दिखला गया है कन्हैया

वो हर काम करता कराता है ख़ुद ही
मिरे नाम लिखवा गया है कन्हैया

अजल है अटल शक नहीं इसमें कोई
मगर जीना सिखला गया है कन्हैया

रहो ज़िन्दादिल ज़िन्दगी ख़ुद जिएगी
न समझो कि बहला गया है कन्हैया

ये कहकर 'न नीती धरम से जुदा हो'
मज़ालिम से टकरा गया है कन्हैया

कठिन है बड़ा 'नूर' रमज़ें समझना
जो गीता में समझा गया है कन्हैया

भजन

10

14-2 98

होना न मेरी बात पे हैराँ, कहा न था
क्या खुद को श्री कृष्ण ने भगवाँ कहा न था

दुःख सुख तो जिस्मो जाँ का है ईमाँ कहा न था
होना न कुछ भी इन से परेशाँ कहा न था

फ़ानी ये ज़िन्दगी है तो फ़ानी है कायनात
अर्जुन को क्या ये बर सरे मैदाँ, कहा न था

माँ बाप ये भाई बहन रिश्ते हैं नाम के
झूठा है हर इक रिश्ताए इनसाँ, कहा न था

उपदेश श्री कृष्ण का किस्सा नहीं कोई
होगी न हर किसी से ये पहचाँ, कहा न था

आना अलग-अलग है तो जाना अलग-अलग
नाहक़ है ये हुजूम का सामाँ, कहा न था

बदलेगा जब मुक़ाम तो बदलेगा नाम भी
क्या खुद को 'नूर' कृष्ण ने रथबाँ कहा न था

भजन

11

15-2-98

कन्हैया के लीला रचाने के दिन हैं
अभी नाचने और नचाने के दिन हैं

अभी खेलने और खाने के दिन हैं
अभी तेरे माखन चुराने के दिन हैं

सता ले तू जी भर के बोलीं ये सखियाँ
कन्हैया तिरे दिल दुखाने के दिन हैं

अभी मटकियाँ फोड़ने का है मौसिम
अभी तेरे ऊधम मचाने के दिन हैं

जरासध को तो हराना है लेकिन
अभी हार कर दूर जाने के दिन हैं

सबक़ फिर सिखाएँगे उसको मगर अब
नई राजधानीं बसाने के दिन हैं

बुलाती है कोयल तुझे कृष्ण काले
चले आओ झूला झुलाने के दिन हैं

बसंत आ गया है बहार आ गई है
चले आओ होली मनाने के दिन हैं

अभी साजिशे 'नूर' करते हैं कौरव
अभी पाँडवों को बचाने के दिन हैं

भजन

12

17-2-98

देवकी नन्दन कहूं या नन्द का लाला कहूं
या में तेरी सुन के बनसी बनसरी वाला कहूं

नन्द बाबा का कुंवर गौएँ चराता है मगर
सोचता हूं फिर भी, किस मुंह से उसे ग्वाला कहूं

कोप से इन्दर के रक्षा तू ने गोकुल की जो की
तुझको ऐ गोपाल गिरधर क्यों न रखवाला कहूं

वज्द में आता है सुन-सुन कर तिरी बनसी की धुन
जी में आता है कि हर ग्वाले को मतवाला कहूं

तेरा हो जाता हैं पड़ जाती हैं ये जिसके गले
सच तो ये है मैं तेरी बाँहों को वरमाला कहूं

देखकर गौएँ ही गौएँ ब्रज के गाओं-गाओं में
जी में आता है कि ब्रज भूमी को गौशाला कहूं

कृष्ण है पूनम का चन्दा, सखियाँ हैं घेरे हुए
ऐसा मंजर है कि इनको चाँद का हाला कहूं

यमुना तट पर देखा है सावन में इक भीगा बदन
अपसरा उसको कहूं या 'नूर' ब्रजबाला कहूं

भजन

13 21-2-98

चलो देखें बरसाने होली के जलवे
वो लठमार आँचल के चोली के जलवे

उधर राधा रानी की हमजोलियाँ हैं
इधर हैं कन्हैया की टोली के जलवे

कहीं है अबीर और अंबर पे जोबन
कहीं हैं गुलाल और रोली के जलवे

कहीं ग्वाल बालों की है रास लीला
कहीं गोपियों से ठिठोली के जलवे

कहीं चाय पानी की मेहफ़िल जमी है
कहीं भाँग और उसकी गोली के जलवे

कचौरी समोसे कहीं बंट रहे हैं
कहीं पान बीड़ी तंबोली के जलवे

हुई 'नूर' किसमत तो देखेंगे हम भी
कभी नन्दगाँओं की होली के जलवे

भजन

14

23-2-98

है घनश्याम कैसा रंगीला न पूछो
है काला कि गोरा कि पीला न पूछो

है अमृत भरी कृष्ण की मुसकराहट
है हर शब्द कितना रसीला न पूछो

श्री कृष्ण की ये अदाएँ अजब है
है कितना सजीला लचीला न पूछो

नथैया है वो नाग काली का लेकिन
हुआ रंग क्यों उसका नीला न पूछो

यदुबंसियों के हैं सिरमौर मोहन
है सम्राट क्यों ये क़बीला न पूछो

है अलबेला क्यों 'नूर' बांके बिहारी
है क्यों दाऊ भैय्या हठीला न पूछो

भजन

15

24-2-98

श्री कृष्ण काले का उपदेश सुनकर
सुकूं मिल गया दिल को संदेश सुनकर

युधिष्ठर के मन को हुआ क्लेश सुनकर
तड़प उट्ठा नारद का सन्देश सुनकर

उठा अपना गाँडीव कर धर्म रक्षा
तड़प उट्ठा अर्जुन ये आदेश सुनकर

बना धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र ऐसा
कि बेहद हुए ख़ुश सभी नरेश सुनकर

विदुर और भीषम सदा सटपटाए
वो शकुनी के दिल का हर उद्देष सुनकर

श्री कृष्ण का 'नूर' आदेश ये है
रखो दिल पे क़ाबू फलादेश सुनकर

भजन

16

24-2-98

कहाँ कृष्ण तेरे भजन कह रही हूं
मैं शब्दों में शत-शत नमन कह रही हूं

चराते थे गौवें जहाँ कृष्ण मोहन
खण्डर आज हैं जिन को बन कह रही हूं

वही हैं वही कृष्ण की कूंज गलियाँ
जिन्हें आज भो वृन्दाबन कह रही हूं

तस्सवुर में ला कर कृष्ण का ज़माना
मैं ब्रज को चमन दर चमन कह रही हूं

नज़र आ रहे हैं मुझे कृष्ण उनमें
'क़दम' को जो सर्वो-सुमन कह रही हूं

हर इक शय में ब्रज की मुझे आस्था है
जो सूखी नदी को 'यमुन' कह रही हूं

ये ऐ 'नूर' सब कृष्ण ही की है लीला
जिसे मथुरा का बाँकपन कह रही हूं

भजन

17 24-2-98

तिरो लीला न्यारी है बाँके बिहारी
चकित दुनिया सारी है बाँके बिहारी

हक़ीकत को तेरी चमतकार समझा
ये ग़लती हमारी है बांके बिहारी

बसी है जो साँसों में ब्रजवासियों के
वो ख़ुशबू तुम्हारी है बाँके बिहारी

ब्रज की अलग बात वरना ज़माना
तुम्हारा पुजारी है बाँके बिहारी

है नीती से भरपूर हर शब्द उसका
वो गीता तुम्हारी है बाँके बिहारी

तसव्वुर से जिस के मुनव्वर हो तन मन
छवी वो तुम्हारी है बाँके बिहारी

है गिरधर तुही तो तुही बन्सीवाला
तुही चक्रधारी है बाँके बिहारी

मिरे मन पे ऐ 'नूर' है राज जिसका
वो बाँके बिहारी है बाँके बिहारी

भजन

18

25-2-98

श्री कृष्ण से लौ लगा कर तो देखो
उन्हें अपने दिल में बसा कर तो देखो

तबक़ चौधह हो जाएँ रौशन तुम्हारे
कलेजे से उनको लगा कर तो देखो

ये रिश्ता भगत और भगतवत्सल का
कभी उनको दिल से बुला कर तो देखो

नहीं खेल बच्चों का बनसी बजाना
कृष्ण जैसी बनसी बजा कर तो देखो

कला कोई हो आते-आते है आती
कृष्ण जेसी लीला रचा कर ता देखो

कठिन कितना है 'नूर' बनना ग्वाला
कभी तुम भी गौएँ चरा कर तो देखो

भजन

19

25-2-98

ये कलयुग है कलयुग, नहीं जाने वाला
अभी त्रेता सतयुग नहीं आने वाला

अभी तो है द्वापर की कुछ गूंज बाक़ी
अभी घोर कलयुग तो है छाने वाला

न इनसाँ रहेगा न इनसाँनियत ही
जो होगा वो इक दूजे को खाने वाला

न रीती न नीती रहेगा न इमाँ
फ़क़त होगा शैतान बहकाने वाला

कोई पीरो-मुरशिद न होगा जहाँ में
न होगा कोई राह दिखलाने वाला

रहेगा न माँ बेटी बीवी में अन्तर
समझदार होगा न समझाने वाला

यकायक मगर कोई चमकेगा सूरज
कोई आएगा 'नूर' फ़ैलाने वाला

भजन

20

13-3-98

मैं गोपाल का हूं है गोपाल मेरा
वो मेरा है मेरा बहर हाल मेरा

दिया है तुझे नाम प्रतिपाल मैंने
ज़रा ध्यान भी रखना प्रतिपाल मेरा

ये गीता उसी ग्वाल ही की है रचना
जो करता है हल पल में जंजाल मेरा

ये नुकता उसी का बताया हुआ है
न तन है न मन है न है माल मेरा

श्री कृष्ण गीता में फ़रमा गए हैं
बिछाया हुआ है हर इक जाल मेरा

अगर चाहते हो मिले तुमको मुक्ती
तो फिर नाम जपना महोसाल मेरा

है जैसे ये धरती ये आकाश गंगा
है वैसे ही सुन्दर सा पाताल मेरा

मिरी आसथा 'नूर' मेरा है जीवन
कि घनश्याम मेरा है गोपाल मेरा

भजन

21

25-2-98

हरे कृष्ण भज लो हरे राम भज लो
हर इक सुबह भज लो हर इक शाम भज लो
जहाँ तक बने तुम प्रभु नाम भज लो
भला हो भला हो भला भला हो

प्रभु नाम है रौशनी लाने वाला
अंधेरे दिलों को है चमकाने वाला
ये हर समत है 'नूर' फैलाने वाला
समो कर रखो अपने सीने में इस को
भला हो भला हो भला हो भला हो

ये देता है सुख भी तथा शान्ती भी
ये देता है युक्ति हमें ज्ञान की भी
दिलाता है मुक्ति अभी भी कभी भी
प्रभु नाम से अपनी रसना भिगो लो
भला हो भला हो भला हो भला हो

हरि नाम मन से न हरगिज़ भुलाना
इसे प्यार का झूला हर दम झुलाना
जगो आप भी दूसरों को जगाना
बहुत सो लिया 'नूर' बेहतर है जागो
भला हो भला हो भला हो भला हो

भजन
22

27-2-98

हरी बोल बन्दे, हरी बोल बन्दे
हरी बोल मीठे हैं मिश्री मखाने
रहें ताज़ा हर दम न हों ये पुराने
चुगें हन्स जिनको यही है वो दाने
तुझे जिस क़दर मिल सकें रोल बन्दे
हरी बोल बन्दे

गरीबों के दुःख दूर हों इसके दम से
अंधेरे भी काफ़ूर हों इसके दम से
मसंरतें भरपूर हों इसके दम से
मिले तुझ को सब कुछ ये बे मोल बन्दे
हरी बोल बन्दे

यक़ीनन तुझे 'नूर' देंगे वो दरषण
तू कर उनके चरणों में सरवस्व अरपण
मिलेगा वो हर साँस की बन के धड़कन
ज़रा दिल की आँखें मगर खोल बन्दे
हरी बोल बन्दे हरी बोल बन्दे

भजन

23

13-3-98

कहने को तो रंगों का ये त्यौहार है होली
दरअस्ल ये खुशियों ही का भंडार है होली

दुशमन भी गले मिलते हैं इस दौर में बाहम
अज़ सर ता क़दम मस्ती भरा प्यार है होली

नफ़रत को तो बढ़ने ही नहीं देती ज़रा भी
भारत में तो ये 'चीन की दीवार' है होली

तसकीन, वफ़ा, अमनों-अमाँ, रंगे-अखुव्वत
बसते हैं ये सब जिस में वो संसार है होली

नाच उठता है हर पीरो-ज्वाँ इसकी खनक पर
यानी किसी पायल की ये झंकार है होली

द्वापर में श्री कृष्ण ने रंग इसमें भरा था
कलयुग में भी ब्रज का यही आधार है होली

दीवानगी तक तक के ये दीवानों की अपने
सर-मस्त है सर-खुश है ये सरशार है होली

नौ-रंगे-फ़ज़ा देख के कहना ही पड़ेगा
त्यौहारों का राजा यही सरदार है होली

खुश हो के मुसलमाँ भी मनाते हैं ये बाहम
कहते हैं कि अपना भी ये त्यौहार है होली

पुर कैफ़ बहारों में तो लगता है ये ऐ 'नूर'
अपना कोई मजमआए अशआर है होली

भजन

24

13-3-98

आओ त्यौहार ये होली का मनाएँ बाहम
मिल के माहौल को खुश वक्त बनाएँ बाहम

देखने वाले जिसे देखते ही झूम उठें
आओ 'मोहन' की तरह रास रचाएँ बाहम

भेद बाक़ी न रहे माओ-शुमा का कोई
बाँहे फैलाए हुए मिलने को आएँ बाहम

आदमी जो भी नज़र आए वो इनसान लगे
बन के इनसान ज़माने को दिखाएँ बाहम

यूं लगे सारा जहाँ एक है बस एक फ़क़त
बस्तियाँ ऐसी ज़माने में बसाएँ बाहम

कोई त्यौहार हो यूं समझें कि आई होली
सारे त्यौहार कुछ इस तरहा मनाएँ बाहम

कोई मजलिस हो, सरे-आम हो कोई महफ़िल
गीत उलफ़त हो के ऐ 'नूर' सुनाएँ बाहम

भजन

25

14-3-98

मिल जुल के अगर रंग भरा और ज़्यादा
ख़ुद निखरेगी होली की छटा और ज़्यादा

याद आएगी जितनी तुम्हें बरसाने की होली
याद आएगी 'राधा' की अदा और ज़्यादा

सहवन भी नहीं [illegible] की परवा जिसे मुतलक़
मिलती है उसे दादे वफ़ा और ज़्यादा

ख़ुद चौदह तबक़ तुम पे भी हो जाएँगे रोशन
गीता को अगर तुमने पढ़ा और ज़्यादा

मीरा की तरह ज़हर भी बन जाएगा अमृत
गिरधर को अगर याद किया और ज़्यादा

गो 'सूर' भी है कृष्ण की महिमाँ का ख़ज़ाना
रसख़ान रिझाता है ज़रा और ज़्यादा

हो चुप तो छबि लगती है घंश्याम की दिलकश
मुसकाए तो लगता है भला और ज़्यादा

ऐ 'नूर' श्री कृष्ण की महिमाँ है कुछ ऐसी
फ़रमाइशें होती हैं 'सुना और ज़्यादा'

भजन

26

14-3-98

भगवान श्री कृष्ण की तसवीर तो देखो
रण भूमि में करते हुए तक़रीर तो देखो

जैसे कई महताब चमकते हों फ़लक पर
घनश्याम के रुख़ पर खिली तनवीर तो देखो

अश्लोक हैं वेदों के श्री कृष्ण के मुख पर
माथे पे झलकती हुई तहरीर तो देखो

आया था न आएगा कभी ऐसा कन्हैया
ब्रज वासियो अपनी ज़रा तक़दीर तो देखो

उंगली पे सुदर्शण का तो नज़्ज़ारा अलग है
उस उंगली पे गिरवर की ये तौक़ीर तो देखो

गीता का हुआ है न कोई होगा मुक़ाबिल
भारत को जो हासिल है वो जागीर तो देखो

भगवान की किरपा का असर इन पे है ऐ 'नूर'
अशआर को मेरे ज़रा तासीर तो देखो

भजन

27

15-3-98

निराली सुनूं या निराले को देखूं
सुनूं बंसी या बंसी वाले को देखूं

अंधेरे में दिन के उजाले को देखूं
यही धुन है अब कृष्ण काले को देखूं

बिठा कर उसे सामने अपने पहरों
यही जी में है उस ग्वाले को देखूं

जहाँ बैठे हो बनके तुम संगे असवद
यही जी में है उस शिवाले को देखूं

जिसे प्यार से कहते हैं कृष्ण काला
हो क़िसमत तो मैं ऐसे काले को देखूं

पछाड़ा था मुष्टक संघारा था चाँवड़
कहाँ आज ऐसे जियाले को देखूं

उसे गोपियाँ घेरे रहती हैं हर दम
मैं कैसे यशोधा के पाले को देखूं

मुझे 'नूर' गिरधर को पाने की धुन है
डगर को कि पाओं के छाले को देखूं

भजन

28

16-3-98

खुले हैं दिल के दरवाज़े, कृष्ण मोहन चले आओ
कसेगा कौन आवाज़े, कृष्ण मोहन चले आओ

बिरह की आग में पहले ही कब से जल रहे हैं हम
न दो ज़ख्म और अब ताज़े कृष्ण मोहन चले आओ

नज़रअंदाज़ करके हम ने अब तक नीतियाँ तेरी
बहुत भुगते हैं ख़िमयाज़े, कृष्ण मोहन चले आआओ

नहीं द्वापर सी आई दिलकशी फिर अपने चेहरों पर
मले है ग़ाज़े पे ग़ाज़े कृष्ण, मोहन चले आओ

कहा भी था कि आऊँगा ज़रूरत जब तिरी होगी
लगाएँ कब तक अंदाज़े कृष्ण मोहन चले आओ

स्वागत को तुम्हारे फ़र्शेरह हैं दिल जिगर आँखें
ये बन्दनवार, दरवाज़े, कृष्ण मोहन चले आओ

नहीं ख़ाकों में आया रंग भरना 'नूर' को अब तक
घिसाए रोज़ परक़ाज़े, कृष्ण मोहन चले आओ

भजन

29

17-3-98

रहे राधा राधा रहे कृष्णा कृष्णा
ज़ुबाँ पर हमारी रहे, कृष्णा कृष्णा

कभी बनके गंगा कभी बनके यमुना
दिलों में हमारे बहे कृष्णा कृष्णा

मुसीबत में कोई अगर घिर गया हो
मुनासिब है उसको, कहे कृष्णा कृष्णा

ग़मो में तो भूले से भी वो न भूले
जपों जब लगें क़हक़हे, कृष्णा कृष्णा

ये मुक्ति का ताला है युक्ति की ताली
लबों पर हमेशा रहे कृष्णा कृष्णा

अगर सहल करना हो मुक्ति का रसता
दमेवापसीं ही कहे, कृष्णा कृष्णा

जो रसपान करना हो हर साँस अमृत
ज़रूरी है रसना कहे कृष्णा कृष्णा

भजन

30

16-3-98

बजेगी जो बंसी सुनाई तो देगा
हमें बंसी वाला दिखाई तो देगा

वो रसिया है माखन का खाएगा माखन
सखों को मगर वो मलाई तो देगा

मज़ा लेगा खुद गोपियों में वो घिर कर
वो मैया की लेकिन दुहाई तो देगा

सुदामाँ के चावल जो खाए तो फिर क्या
ग़मों से वो उसको रिहाई तो देगा

बना तो है रथबान लेकिन ये तै है
कि अर्जुन को वो रहनुमाई तो देगा

करम धर्म फ़ल, भेद तीनों में क्या है
कभी कुन्ती सुत को दिखाई तो देगा

चलोगे अगर धर्म पर 'नूर' तुम भी
ये जोखम बिलआख़िर कमाई तो देगा

भजन

31 18-3-98

हसीं नाज़नीं श्याम सुन्दर को देखो
जमालआफ़रीं श्याम सुन्दर को देखो

वो होता है जब अपने भक्तों के ग़म में
ग़मीनोहज़ीं, श्याम सुन्दर को देखो

महो-मेहरो-अंजुम के भी हैं वो मेहवर
ऐ एहले ज़मीं, श्याम सुन्दर को देखो

वो कहता है जब 'मैंने माखन न खायो'
यशोधा नहीं, श्याम सुन्दर को देखो

नहीं आ रही रंग पर रास लीला
ग्वालो कहीं श्याम सुन्दर को देखो

घिरा हो वो जब गोप और गोपियों में
किसी को नहीं, श्याम सुन्दर को देखो

अगर लुत्फ़अंदोज़ ऐ 'नूर' होना
रदीफ़े हसीं श्याम सुन्दर को देखो

भजन

32

16-3-98

कन्हैया की मुर्ली सुनाती है क्या-क्या
हमें मस्तो-बेखुद बनाती है क्या-क्या

कन्हैया की मुर्ली की लीला है न्यारी
नहीं जानती कि वा गाती है क्या-क्या

कोई नाचता है कोई झूमता है
न जाने वो मदरा पिलाती है क्या-क्या

बजे वो कहीं, दे कहीं वो सुनाई
श्रोताओं को वो बनाती है क्या-क्या

है तो बाँस की पोरी बालिश्त भर की
मगर नाच सब को नचाती है क्या-क्या

ये अंदर से तो एक दम खोखली है
धुनों से ये जादू जगाती है क्या-क्या

वो गौएँ हों ग्वाले हों या गोपियाँ हों
असर 'नूर' उनपे दिखाती है क्या-क्या

भजन

33

18-3-98

हो खुशियों का बचपन हरे कृष्ण बोलो
ग़मों पर हो जोबन हरे कृष्ण बोलो

करो रोज़ तरपण हरे कृष्ण बोलो
वो खुद देंगे दर्शन हरे कृष्ण बोलो

कोई ख़ास मौसिम नहीं सिमरने का
हो फ़ागुण कि श्रावण हरे कृष्ण बोलो

ये तन मन ये धन जिसको अपना हो समझे
करो उस के अरपण हरे कृष्ण बोलो

वो जब भी तुम्हारे ख्यालों में आँए
वो वेला है पावण हरे कृष्ण बोलो

लगे डूबने 'नूर' जब दिल तुम्हारा
कि हो तेज़ धड़कन, हरे कृष्ण बोलो

भजन

34

30-3-98

ग़म दिया तू ने मुझे ऐसा, भजन भूल गया
फूटी तक़दीर मिरी तेरा भजन भूल गया

वो तो सब याद रहा शैली थी जिसकी अशलील
थी फ़क़त जिसमें तिरी महिमा, भजन भूल गया

इनक़लाब आगया ये कैसा तबीयत में मिरी
ज़ो मैं गाता था बिलानाग़ा, भजन भूल गया

तेरी सखियों की गुहारें तो मुझे याद रहीं
भूला तो मैं तिरी लीला का भजन भूल गया

राधे राधे ही निकलता रहा मुख से मेरे
जिस में था राधा रमन प्यारा भजन भूल गया

जिस के गाने से मुझे शान्ति मिलती थी सदा
वाए हैरत वो कन्हैया का भजन भूल गया

जाने किन करमों का फल है कि है महरुमेनसीब
'नूर' को कृष्ण का हर प्यारा, भजन भूल गया

भजन

35

30-3-98

फिर तिरे भजनों की याद आने लगी है मोहन
याद फिर से तिरी भरमाने लगी है मोहन

डर है हो जाएँ न हम मुर्ली की धुन से मेहरूम
फिर ये राधे की क़सम खाने लगे है मोहन

कुछ तो जी उट्ठेंगे, मर जाएँगे वे मौत भी कुछ
जाने अब बाँसुरी क्या लगी है मोहन

वरना ये धुन तो कभी तूने सुनाई ही न थी
कुछ तो है बात जो भरमाने लगी है मोहन

रोज़ सुन सुन के धुनें बन्सरी की शामो सहर
रम्ज़ कुछ हम को समझ आने लगी है मोहन

'नूर' पहले ही से क़ुरबान है बंसी पे तिरी
आज कुछ और भी भरमाने लगी है मोहन

भजन

36

1-4-98

गिरधर से लौ बढ़ा के भजन कह रही हूं मैं
उस को गले लगा के भजन कह रही हूं मैं

खुशियों को जगमगा के भजन कह रही हूं मैं
ग़म का दिया बुझा के भजन कह रही हूं मैं

गिरधर से कहना बादेसबा हाले-दिल मिरा
किस दरजा तिलमिला के भजन कह रही हूं मैं

घंश्याम की झलक है हर इक छंद में मिरे
मन में उन्हें बसा के भजन कह रही हूं मैं

सेहनेअदब में खुशबू रहूंगी बखेरती
लालाओगुल मिला के भजन कह रही हूं मैं

गिरधर हैं स्वाँस स्वाँस में मेरे बसे हुए
उनको लुभा लुभा के भजन कह रही हूं मैं

: पूर्ण :

दूसरा अध्याय

गुलहाए अक़ीदत

उर्फ़

श्रद्धा सुमन

"नात व सलाम"

हज़रत इमाम हुसैन के हुज़ूर

1998

नब्बाज़े फ़ितरत
इमतियाज़े तालिब
नूर कोहली
अकबराबादी

—: उद्गार :—

मेरे आदरणीय पाठक गण मेरे इस संग्रह में अनोखा पन देख कर हैरान ज़रूर होंगे कि जहाँ मैंने भजनों के रूप में भगवान श्री कृष्ण के चरणों में श्रद्धा के पुष्प अरपित किए हैं। वहीं मैंने हज़रत इमाम हुसैन जो के गैर हिन्दू आदरणीय व्यक्ति हैं के प्रति भी उसी भावना से श्रद्धा सुमन अरपित किये हैं ये मेरे जज़बाए रवादारी की देन है जो मुझे अपने पुर्खों से विरासत में मिली है। मैं किसी मज़हब से भी दुराव नहीं रखता सब में अच्छी बातें हैं जो समान रूप से सराहनीय हैं

मैं आशा करता हूं पाठकगण मेरे इस क़दम की सराहना करेंगे। भावों में त्रुटि रह गयी हो तो क्षमा कीजिएगा।

भवदीय

नूर कोहली

नॉत शरीफ़

1

प्यम्बर नाम क्या बे वजह पाया है मुहम्मद ने
ख़ुदा का हुक्म आलम को सुनाया है मुहम्मद ने

किसी से बुग़्ज़ रखना कब सिखाया है मुहम्मद ने
सबक़ ख़ुल्क़ो मुहब्बत का पढ़ाया है मुहम्मद ने

जो माने वो भी है उसका न माने वो भी है उसका
ख़ुदा मालिक है सब का ये बताया है मुहम्मद ने

मज़ाहिब सिर्फ रसते हैं ख़ुदा है मंज़िले मक़सूद
रहे इसलाम को सीधा बताया है मुहमदम ने

ख़ुदा को एक कह कर नूर कह कर जाने जाँ कह कर
दुई का नक़श आलम से मिटाया है मुहम्मद ने

नहीं मालूम ये किस को दिले तारीके इनसाँ में
चराग़े वहदते-इरफ़ाँ जलाया है मुहम्मद ने

ख़ुदा है जो मुसलमाँ का वही है 'नूर' अपना भी
जो मुनकिर हैं उन्हें काफ़िर बताया है मुहम्मद ने

नॉत शरीफ़
2

तरह—शम्मे तौहीद जलाने के लिए आप आए

फ़र्ष को अर्ष बनाने के लिए आप आए
गुलशने दहर पे छाने के लिए आप आए

बिगड़ी हर इक की बनाने के लिए आप आए
यानी आए तो ज़माने के लिए आप आए

है ख़ता दूसरों से बुग़्ज़ो कदूरत रखना
ये सबक़ सब को पढ़ाने के लिए आप आए

जो भटकते थे जहालत के ब्याबानों में
राहे हक़ पर उन्हें लाने के लिए आप आए

दोसतो ख़ुलक़ो मुहब्बत में है पोशीदह हयात
राज़ ये सब को बताने के लिए आप आए

वो सब आयात जो हक़ से हुईं नज़िल यानी
मुसहफ़े पाक सुनाने के लिए आप आए

'नूर' ओहाम परस्तो के जो थे लातो-हुबल
उनको दुनिया से मिटाने के लिए आप आए

नॉत शरीफ़

3

दोस्तदारे कुफ़रोदीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा
रहमतुल्ल इलआलमीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा

इश्क़ के अर्शें-बरीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा
खुल्क़ की अतहर ज़मीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा

जिससे आलम को मिला है नूरे वहदत का पता
तुम वही नक़्शे हसीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा

खुलक़ो उलफ़त के पुजारी का वो इक माबूद है
तेरा नक़्शे पा कहीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा

है हदूदे अंबिया से भी परे जिसका मुक़ाम
तुम वो शाहे मुरसलीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा

इस बुलंदी तक रसाई कब किसे हासिल हुई
ज़ीनते अर्शे बरीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा

जाबजा जिस की ज़्या है नूर के अशआर में
तुम वही माहे मुबीं हो या मुहम्मद मुसतफ़ा

सलाम

4

30-3-98

हर शक़ी पहुंचा दिया दोज़ख़ में रहबर की तरह
कौन ऐसा तेग़ज़न है इबने हैदर की तरह

क़िस क़दर ज़ीरेज़ था ख़ने शहीदानें वफ़ा
नूर अफ़शां करबला है माही अखतर की तरह

गूंजता है कुल जहाँ में आज भी नामे हुसैन
पी गए जो आबे खंज्जर आबे कौसर की तरह

फट के रह जाती थीं काई सी हरीफ़ों की सफ़ें
कौंदती थी तेग़ हैदर बर्क़ों सरसर की तरह

या ख़ुदा मिल जाए फिर कोई ख़िज़र मिसले अली
खा रही है ठोकरें उम्मत सिकंदर की तरह

हक़ इबादत का अदा करना बहुत दुशवार है
सरदिया सजदे में किसने इबने हैदर की तरह

रहमते-यज़दां के दरवाज़े भी खुद खुल जाएँगे
नोशकर जामे शहादत 'नूर' अकबर की तरह

सलाम
5

ख़ार तो ख़ार चमन में गुले तर जलता है
ग़मे शब्बोर में एक एक जिगर जलता है

आग बातिल की ये लोगों ने लगाई कैसी
दश्ते करबल है कि ता हद्दे नज़र जलता है

कुछ स्या दाग़ नुमायां हैं रुखे रौशन पर
ग़म में शब्बीर के शायद ये क़मर जलता है

बन्दाए सब्रो रिज़ा हज़रते शब्बीर सा कौन
खुद खड़े देखते हैं अपना ही घर जलता है

सोज़ेग़म दिल में है और आँख से हैं अश्क रवाँ
ग़ालिबन फ़ातिमा ज़हरा का जिगर जलता है

गुमरहों के लिए शब्बीर का तबिन्दा शऊर
इक दिया है जो सरे राहगुज़र जलता है

आज भी ख़ावरे हसनैन है रौशन ऐ 'नूर'
आज भी देख लो हर बानीये शर जलता है

सलाम
6

कर दिया हैरान सबको शाह की तक़रीर ने
सूर फूंका जिस तरह क़ुरआन की तफसीर ने

लाख उठे तूफान कौंदी लाख ग़म की बिजलियाँ
ज़ब्त का दामन न छोड़ा हज़रते शब्बीर ने

वो अली असग़र जो पैकाँ के बरावर भी न था
हुरमला तुफ़ है कि मारा उसको तेरे तीर ने

डर के मारे अशक़िया का खून पानी हो गया
जब दिखाए अपने जौहर हैदरी शमशीर ने

ये था किरदारे हुसैनो ये था अंदाज़े लतीफ़
दुशमनों को भी दुआ दी हज़रते शब्बीर ने

दश्ते-करबल दश्ते वीराँ के इलावा कुछ न था
अज़मते जन्नत अता की शाह की तौक़ीर ने

वस्सलाम ऐ शाहे करबल 'नूर को भी कर दिया
मतलाए अनवार तेरे इश्क़ की तंवीर ने

सलाम

7

1-4-98

रहे न क्यों मिरे लब पर हमेशा नामे हुसैन
जब ऐहतरामे नबी है खुद एहतरामे हुसैन

उन्हीं के पीछे अदा करनी है नमाज़े वफ़ा
तभी तो कहती है दुनिया उन्हें इमामे हुसैन

अयाँ है साफ ये असग़र की मुसकराहट से
है इशवियाक़े शहादत उसे बनामे हुसैन

झुके न पेशे जफ़ा सर रहे रहे न रहे
यहीं है रमज़े शहादत यही प्यामे हुसैन

रहे हैं बन के बो दोशे रसूल के राकिब
बुलंद अर्श से फिर क्यों न हो मुक़ामे हुसैन

भरी है सोज़े मुहब्बत की गरमियाँ इस में
सहर को भी नहीं बुझता चराग़े शामे हुसैन

न आएँ वज्द में क्यों सामईन सुनके इसे
कलामे 'नूर' पे है सायाए सलामे हुसैन

सलाम

8

रौशन हुआ है मारकए करबला के बाद
इब्ने अली का नाम रसूले ख़ुदा के बाद

ये हौसला है सिब्ते नबी के सिवा किसे
दे जो दुआ उदू को भी उसकी जफ़ा के बाद

था ख़ातमा हुसैन पे हर जुल्मो जौर का
फिर और करबला न हुई करबला के बाद

लुट तो चुका था ख़ैमाए आले अबा मगर
इसमत निगाहबाँ थी नक़ाबो रिदा के बाद

भेजे न क्यों सलाम ख़ुदा उनके नाम पर
लाए हुसैन पर जो यक़ीं मुरतज़ा के बाद

ऐ 'नूर' जिनकी सिब्ते पयम्बर से उनस है
सीधे बहिशत जाएंगे रोज़े जज़ा के बाद

सलाम

9 28-3-70

सिबते नबी ने इस पे लहू क्या गिरा दिया
मैदाने करबला का मुक़द्दर जगा दिया

हाथों पे यूं हुसैन के असग़र की लाश थी
जैसे किसी ने रहल पे क़ुरआँ सजा दिया

ख़ुद को मिटा के हक़्क़ो सदाक़त की राह में
अब्बास ने वफ़ा का मुक़द्दर जगा दिया

'हुरमल' को तो ख़ता ने किया रांदए जहाँ
'हुर' को ख़ता ने लाइके जन्नत बना दिया

जो तश्नालब रहे सरे करबोबला उन्हें
बदले में हक़ ने वारिसे कौसर बना दिया

दुनिया न किस लिए उसे शाहे उमम कहे
उम्मत को जिसने साआए बाले हुमा दिया

तेरी सलाहियत पे गुमां हो रहा है 'नूर'
ऐसा सलाम बज़्मे - सुख़न में सुना दिया

सलाम

10

5-4-69

मुजरई ऐ माहे क़िनआँ मुजरई
मुजरई ऐ नूरे ईमाँ मुजरई

मुजरई ऐ अज़मते दोशे रसूल
मुजरई शाहे शहीदाँ मुजरई

मुजरई ऐ फ़ातहे फ़िसको फ़ज़ूर
मुजरई ऐ फ़ख़रे इनसाँ मुजरई

रहनुमाए जाँ-निसाराने रसूल
ऐ अमीरे सरफ़रोसाँ मुजरई

राज़दारे रमज़ो हक्क़े बन्दगी
साहिबे इरफ़ानो - इक़ाँ मुजरई

पैकरे ईसारो-तसलीमो रिज़ा
हूबहू तसवीरे क़ुरआँ मुजरई

कह रहा है 'नूर' बा सद इफ़तख़ार
दोसते गबरो मुसलमाँ मुजरई

सलाम

11

सरक़ारे नज़्मो ज़ब्ते ज्वानाने करबला
तुझको सलाम शाहे शहीदाने करबला

सींचा था अपने ख़ून से बुस्ताने करबला
सिब्ते नबी थे वाक़ई रिज़वाने करबला

बातिल को जिस बला की हुई थी यहाँ शिकस्त
शाहिद है इसका आज भी मैदाने करबला

महका दिया है तूने ही इनसानियत का बाग़
तुझको सलाम मालिके बुस्ताने करबला

मुद्दत हुई बहा था जब आले नबी का ख़ून
तर आज भी है जैबो गिरेबाने करबला

हँस कर जिन्होंने जामे शहादत किया था नोश
ऐ 'नूर' अस्ल में थे वही शाने करबला

सलाम

12

शब्बीर हर ज़ुबा पर ये खास गुफ़्तगू है
इनसानियत है नाज़ाँ जिस पर बो सिरफ़ तू है

तू अज़मते सदाक़तें [illegible]राने - आबरू है
वो आरज़ू है जिसकी हर दिल को आरज़ू है

गरदिश में शामियों का है आज भी सितारा
और आफताबे ज़हरा ज़ौरेज़ चारसू है

हज़रत हुसैन जब से वासिल बहक़ हुए हैं
मरदानगी को उनकी हर सम्त जुस्तजू है

क्या इससे बढ़ के होगी बेदादिये ज़माना
पैकाने हुरमला है मासूम का गलू है

ऐ 'नूर' क्यों न फैले ता हश्र नूरे उसका
ईमान के दिए में शब्बीर का लुहू है

सलाम

13 10-4-69

मिरे मौला ये शायद इन्तिहा है फरते मातम की
हर इक दिल से निकलती है सदा शब्बीर के ग़म की

अजब फ़ितरत है देखो राकिबे शाहे दो आलम की
कि शोला रज़्म है बज़्म में तस्वीर शबनम की

ज़माने भर की नेमत से भला रग़बत उसे क्या हो
जिसे जी भर के दौलत हो मिली शब्बीर के ग़म की

सुनो असग़र सुनो अपनी बहन के दुख भरे नाले
फटा जाता है धरती का कलेजा हद हुई ग़म की

ये है तुरफ़ा तमाशा तशना-लब है साक़िए कौसर
ज़िहे शाने हरीफाना अदू की पी गऐ धमकी

ग़मे शब्बीर में पेहम ये अशकों की फ़िरापानी
बिनाए मतलाए अनवार है माहे मुहर्रम की

शरीके मातमे शब्बीर है इक 'नूर' सा आसी
खुदाया लाज रक्खें आज उसकी चश्मे पुरनम की

सलाम
14

लाया नहीं जो हरफ़े 'नहीं' लब पे 'हाँ' के बाद
है जुज़ हुसैन कौन रसूलुलज़माँ के बाद

राहे हुदा में कौन हुआ इस तरह शहीद
सिबते नबी से पहले इमामे जहाँ के बाद

सच सच बता ऐ करबोबला तेरी गोद में
पहुंचा है यूं भी फिर कोई उस कारवाँ के बाद

टुकड़े पिसर हो और न उफ़ भी करे पिदर
होगा न इमतिहाँ कोई इस इमतिहाँ के बाद

पहले तो इक निशाँ थे पहेली थे राज़ थे
निखरे हुसैन ग़म से भरी दासताँ के बाद

अब तक ग़मे हुसैन में पाता हूं ये असर
तसकीन दिल को मिलती है आहोफ़ुगाँ के बाद

मिट कर रहेंगी ज़ुलमतें ईमाँ के नूर से
'नूर' अब यक़ीन होने लगा है गुमाँ के बाद

सलाम

15

28-3-71

दिखाई इबने अली ने शुजाइतें क्या क्या
उठाई दीन की ख़ातिर अज़ीयतें क्या क्या

झुका सके न सरे शाहे करबला को शक़ी
बरूए कार वो लाए सियासतें क्या क्या

यज़ीदो शिम्र से इनसाँ ये बात क्या जानें
हमें सिखाती हैं क़ुरआँ की आयतें क्या क्या

मिला है बिसतरे आली उसे शबे हिजरत
मिली हैं न्वासे को नाना से नैमतें क्या क्या

शहे उमम है शहे दीं है शाहे करबल हैं
नसीब सिब्ते नबी को हैं अज़मतें क्या क्या

क़दम तो देखे हैं दोशे रसूल तक शह के
बताऐं उनकी अब आगे फ़ज़ीलतें क्या क्या

मिसाल हुर की है पेशे नज़र तिरे ऐ 'नूर'
जो बदली शह ने बनी हैं वो क़िसमतें क्या क्या

सलाम

16 28-3-90

देखकर इनसानियत को ख़ाक बरसर बार बार
याद आते हैं हमें सिब्ते पयम्बर बार बार

शामियों ने गो चलाऐ उन पे खंजर बार बार
ज़िकरे हक़ करते रहे लेकिन बहत्तर बार बार

करबला में बैन मज़लूमों के सुन कर बार बार
अपने झूले में मचल उठता है असग़र बार बार

उफ़ ये चीख़ों की सदा वा हसरत वहशत का जोश
खैमे से बानो निकलती थी खुले सर बार बार

पाए इसतक़लाले - सरवर लड़खड़ाते ही नहीं
आग उगला ही किया गो शाहे खावर बारबार

यूं तो ग़म अफ़ज़ा है यादे हर गुले बाग़े बतूल
खूं रुलाता है मगर इक गुंचाएतर बार बार

'नूर' जब पाती है रौनक़ तुझसे हर बज़्मे सुखन
भूल जाते हैं तुझे फ़िर क्यों सुखनवर बार बार

सलाम

17

26-2-72

बक़ारे ज़िन्दगी बढ़ता है इज़्ज़त ऐसी होती है
न था हमको पता शाने शहादत ऐसी होती है

नहीं बुझती कभी जो लाख तूफानों में भी घिर कर
ये देखो क़ूफ़ियो शम्मेइमामत ऐसी होती है

कटाया हज़रते शब्बीर ने सजदे में सर अपना
इबादत इसको कहते हैं इबादत ऐसो होती है

वो बातिल है जो होकर बेअमल ये वॉज़ फ़रमाए
शरीयत ऐसी होती है शरीयत ऐसी होती है

बहत्तर शेर थे लाखों यज़ीदों से जो टकराए
इसे मरदानगी कहते हैं जुरंत ऐसी होती है

सरे शब्बीर मीरे क़ाफ़ला बनकर है नेज़े पर
इमामत इसको कहते हैं इमामत ऐसी होती है

हर इक आँसू सितारा बनके उनकी याद में चमका
नज़र में 'नूर' तौक़ीरे इमामत ऐसी होती हैं

सलाम

18 11-3-72

बिछी है जो सफ़ेग़म मातमे शाहे शहीदाँ की
सना खाँ है बज़ुबाने दिगर इक फ़ख़रे इनसाँ की

कोई समझे न समझे लेकिन ऐहले दिल समझते हैं
प्यमँबर की शहादत है शहादत शाहे ज़ीशाँ की

हुरे गुमराह को पहुंचा दिया ऐवाने बैयत तक
मिला दीं सरहदें शब्बीर ने कुफ़्र और ईमाँ की

फ़ुराते ख़ूं नई पैदा हुई करबल के सैहरा में
इलाहा कितनी अरज़ानी हुई ख़ूने शहीदाँ की

यज़ीदी लॉनती हैं देते हैं उनको सभी लॉनत
निकलती है जहाँ में आज भी शब्बीर की झाँकी

हुआ क्या तीर असग़र को जो मारा हुरमलातूने
अलम ये है कि ख़ाली हो गई है गोद इक माँ की

ज़िहे अज़्ज़ो शरफ़ ऐ फ़ख़रे इनसाँ गर क़बूल उफ़तद
सलाम इक पेशकश अदना सी है 'नूरे' ग़ज़लखाँ की

सलाम

19

7-2-72

वो जो यादे ग़ाज़िये करबोबला रखते नहीं
हक़ तो ये है वो दिले दर्द आशना रखते नहीं

रांदाए दरगाह हो जाते हैं वो मिसले यज़ीद
ज़ुल्म करते वक्त जो ख़ौफ़े ख़ुदा रखते नहीं

हुरमला का तीर खाकर नन्हे असग़र यूं हंसे
जैसे नादानों से वो कोई गिला रखते नहीं

एहले हक़ की दश्त में ये बेकसी ये बेबसी
पास कुछ नक़दे तवक्कुल के सिबा रखते नहीं

जो मसीहाए ग़मे दौरां हैं वो मिसले हुसैन
बस दुआ रखते हैं देने को दवा रखते नहीं

राकिबे दोशे नबी को क्या ज़रूरत खिज़्र की
कौनसी मंज़िल है वो जिसका पता रखते नहीं

'नूर' हम शाइर न क्यों हों मातमे शह में शरीक
दिल में क्या हम दर्दे आले मुस्तफ़ा रखते नहीं

सलाम

20

3-2-73

पासबाँ जब तक है ख़ुद तीरो कमाँ शब्बीर का
किसकी हिम्मत है उजाड़े गुलसिताँ शब्बीर का

रोज़ ही कटते रहे लुटते रहे मिटते रहे
रोज़ ही होता रहा इक इमतिहाँ शब्बीर का

अज़्म को अज़मत अता की आदमीयत को ज़िया
था मिसाले बेमिसाली हर ज्वाँ शब्बीर का

यह समझ लो राहिते कौनैन का मालिक है वो
जिसके पहलू में है दर्दो ग़म निहाँ शब्बीर का

हक़ परसती हक़नवाई की बदौलत आज़ भी
हर तरफ़ आलम में है सिक्का रवाँ शब्बीर का

सजदा करने के लिए आते हैं एहले दिल यहाँ
काबाए एहले वफ़ा है आसताँ शब्बीर का

शामिले बज़्मे अज़ा सब हिन्दूओ मुसलिम है 'नूर'
मोतक़िद है किस क़दर हिन्दोस्ताँ शब्बीर का

सलाम

21

4-2-73

ऐहले ईमाँ डट गए यूं अशक़िया के सामने
ज़िन्दगी हो सरब्कफ़ जैसे क़ज़ा के सामने

क्यों इबादत पर न होता नाज़ शह की ज़ात को
सजदा करते थे वो रण में भी खुदा के सामने

की जो बैयत हुर ने शाहे करबला के हाथ पर
दर खुला रहमत का उसकी हर ख़ता के सामने

मिट गए हैं अशक़िया सब ओर बाकी हैं हुसैन
क्या चराग़े ज़ुल्म जल सकता हवा के सामने

लाश।ए अकबर जो देखा शह ये कह कर रो पड़े
ज़ोर इन्साँ का नहीं चलता क़ज़ा के सामने

नाज़िशे ईमानो दीं को यूं खुले सर देखकर
खुद हया नादिम थी ज़ेनब की रिदा के सामने

हक़ को बातिल से हमेशा होती आई है शिकस्त
ज़ुलमतें कब 'नूर' ठहरीं हैं ज़िया के सामने

सलाम

22 5-2-75

एहले नज़र में क्यों न हो इज़्ज़त हुसैन की
इनसानियत है ज़िन्दा बदौलत हुसैन की

मंज़िल हुई जो तै बसलामत हुसैन की
जादा नुमा थी शम्मे रसालत हुसैन की

रखती नहीं ज्वाब इबादत हुसैन की
अपनी नज़ीर ख़ुद है शहादत हुसैन की

तफ़सीरे हक़ थे और ये तनवीरे मुसतफ़ा
हर बात से अयाँ थी फ़ज़ीलत हुसैन की

तेग़े सितम न सामने आ कर चला सका
छाई थी दिल पे शिम्र के हैबत हुसैन की

अल्लारे इनक़लाब कि अब मोमिनों के पास
जज़बा हुसैन का है न सीरत हुसैन की

मुद्दत हुई है मारक़ए करबला को 'नूर'
है आज भी दिलों पे हकूमत हुसैन की

सलाम

23

8-2-76

क्यों ये कहते हो कि सरवर की शहादत हो गई
क्यों नहीं कहते कि ज़िन्दा आदमीयत हो गई

लाशाए असग़र को हाथों पर लिया जो शाह ने
रहल पर क़ुरआन हो जैसे वो सूरत हो गई

नाज़िशे दीं हज़रते ज़ेनब जो देखीं सर खुले
ख़ुद जफ़ा को बर सरे मैदाँ निदामत हो गई

सूरते सिबते प्यम्बर जिसको जीना आ गया
शक नहीं इस में द्रख़शाँ उसकी क़िसमत हो गई

ख़ून अपना दे के शाहे दीं ने जब सींचा इसे
जाफ़रानेज़ार जैसे किश्ते मिल्लत हो गई

मोजज़ा तबलीग़े शाहे करबला का देखिए
दस्ते शह पर बे किए दुशमन की बैयत हो गई

नाव डूबे 'नूर' जो इक नाख़ुदा के सामने
ये समझ लो वक्त से पैहले क़यामत हो गई

सलाम

24

4-2-73

इतना ही नहीं है कि वो दिलगीर लगे है
हर कोई ग़मे शाह में नख़चीर लगे है

जो चीरता ही जाए है बातिल की सफ़ों को
शमशीर ब्कफ़ वो मुझे शब्बीर लगे है

टुकड़े न करो तुम अली अकबर के यज़ीदो
सरकारे दो आलम की वो तसवीर लगे है

आमाल तिरे इबने ज़्याद इस के हैं शाहिद
ख़िनज़ीर नहीं फ़िर भी तू ख़िनज़ीर लगे है

शब्बीर सा होगा न हुआ है कोई साबिर
दुशमन को दुआ देवे है जब तीर लगे है

सर पीटे न क्यों रोए न क्यों ज़ैनिबे दिलगीर
आखिर तो शहेदीं की वो हमशीर लगे है

बेपरदगिए एहले हरम में है जो परदा
वो 'नूर' किसा की मुझे ततहीर लगे है

सलाम

25 4-1-78

वो ईदे फ़ित्र में न वो इदुज़्ज़हा में है
तक़दीस जो शहादते कर्बोबला में है

दोज़ख की राह छोड़ के हुर ने बता दिया
कहते हैं जिस को ख़ल्द वो राहे वफ़ा में है

देखो जो तुम बग़ौर है दाग़े ग़मे हुसैन
ये जो निशान सा रुख़े बदरुद्दुजा में है

सोना सिपर न क्यों रहे हर ज़ुल्म के खिलाफ़
मरदानगी निहाँ शहे करबोबला में है

जिसका नहीं ज्वाब वो है तेग़े हेदरी
कहते हैं जिसको मरदुमी शेरे खुदा में है

ख़ीरा किया था जिस ने निगाहे क्लीम को
जलवानुमा वो एहले हरम की रिदा में है

गरमाए क्यों न यादे शहे दीं दिलों को 'नूर'
इक़ ये भी वारदात रहे मुसतफ़ा में है

सलाम

26 29-11-78

नामे करबल इस तरह वाबसता है सरवर के साथ
जिस तरह मनसूब है ख़ैबरअलीहैदर के साथ

दुशमनी इनकारे बैयत पर तो थी सरवर के साथ
शामियों क्या बैर या नन्हे अली असग़र के साथ

क्यों सिपाहे शाम में भगदढ़ न मच जाए भला
आए हैं अब्बास रण में परचमे अख़ज़र के साथ

जोशे अकबर देख कर थर्रा उठे सब अशक़िया
नाराए तकबीर गूंजा नाराए अकबर के साथ

ख़ूं उगलने लगगए तारीख़दानों के क़लम
झूझते देखा बहत्तर को जो इक लशकर के साथ

गुलशने ज़हरा तरो ताज़ा है अब भी क्यों न हो
शाह ने सींचा है इस को अपने ख़ूने तर के साथ

रम्ज़े ततहीरी निहां है शाने तकबीरी में 'नूर'
देख लो ज़ेरे किसा सरवर हैं पैग़म्बर के साथ

सलाम

27

9-12-78

धनी सब्रो रिज़ा का दीन का शैदा नहीं देखा
नहीं देखा कोई इबने अली जसा नहीं देखा

स्वाबे हज न पहुँचा हैं न पहुँचेगा कभी हरगिज़
अगर इबने अलो का आपने रौज़ा नहीं देखा

जो होकर साक़िये कौसर भी तरसे बूंद पानी को
किसी ने आज तक ऐसा कोई प्यासा नहीं देखा

अदा की है नमाज़े सजदा तलवारों के साए में
कोई शह सा इमामे मिल्लते बैज़ा नहीं देखा

बहत्तर को बुलाकर उन पे करदी लश्करी यूरिश
बहुत देखे मगर इतना बड़ा धोखा नहीं देखा

शहादत में निहाँ थी ऐसी शाने मोतमिद शह की
कि बादे क़त्ल भी उतरा हुआ चेहरा नहीं देखा

अज़ादारे शहे दीं तो मिलेंगे 'नूर' घर घर में
मुक़ल्लिद हो कोई किरदार का ऐसा नहीं देखा

सलाम

28 15-12-78

हुसैन इबने अली दिल बन्दे ज़हरा॰मुस्तफ़ा वाले
रहे हक़ में मिटे तो हो गए ख़ैरुलबरा वाले

हवा तो बाँधते फिरते हैं दुनिया में हवा वाले
मगर चलने कहाँ देते हैं ऐसों की खुदा वाले

ज़ुबाँ आले अबा की दीन की तफ़सीरे अरफ़ा है
हदे कालो रसूलो में हैं गोया मुरतज़ा वाले

सरे शह देख कर नेज़े पे नाज़ाँ है सरअफ़राज़ी
ज़माना देख ले होते हैं ऐसे मुसतफ़ा वाले

लईं था हुर लईनों से था रबतो वासता उसका
ख़ुदा वाला हुआ जब मिल गऐ उसको ख़ुदा वाले

हुआ है सिलसिला ही ख़त्म ये ख़त्मे इमामत पर
कहाँ देखे हैं इसके बाद तसलीमो रिज़ा वाले

है शाहिद करबला की खाक का ऐ 'नूर' हर ज़र्रा
कि मैदाने मुहब्बत मार लेते हैं ख़ुदा वाले

सलाम

29 9-12-79

मिसाले बेमिसाल इक बन गई तसवीर मिट्टी की
शहीद इस पर जो सोए जाग उठी तक़दीर मिट्टी की

मलाइक भी यहाँ आते हैं सर के बल पये सजदह
बनामे अरसाए करबल है ये तौक़ीर मिट्टी की

गिरा करबोबला पर खून जब नन्हे मुजाहिद का
हुए हैरान हुरमत देख कर शब्बीर मिट्टी की

हुआ बरबाद रफ़ता रफ़ता यूं घर बार सय्यद का
गिरे बरसात में जैसे कोई तामीर मिट्टी की

ये वो जा है कि जिस पर शह ने अपना ख़ून छिड़का था
सनाख़ाँ आज तक है आयाए-ततहीर मिट्टी की

उठाओ सर पे, आँखों से लगाओ, दो इसे बोसा
ये है ख़ाके शिफ़ा यारो ये है इकसीर मिट्टी की

अमीने गुलशने ज़हरा है मेहवर दीनो इमाँ की
ज़मीने करबला ऐ 'नूर' है तफ़सीर मिट्टी की

सलाम

30 2-10-84

ज़ीशान किस लिए न हो मैदाने करबला
रौशन है इस में रौज़ाए सुलताने करबला

अपनी मिसाल आप है जो शाने करबला
लाज़िम है मोतक़िद भी हों शायाने करबला

कट कर भी रहनुमाइऐ ईमान जिस ने की
वो आज भी है फख़रे शहीदाने करबला

फैली है तेरे दम से ही इनसानियत की ज़ौ
तुझ को सलाम शाहे शहीदाने करबला

हर एहले दीं के वासते जाए सकूं है ये
यानी अज़ीम कितना है दामाने करबला

इस में सदा बहार रहे क्यों न ख़ैमाज़न
सींचा हुआ है शाह का बुसताने करबला

'नूर' अपना अरमुग़ाने अक़ीदत सही हक़ीर
कर लें क़बूल शाहे शहीदाने करबला

सलाम

31 8-2-73

इनसानियत जो लाईक़ेसद - इफ़तिख़ार है
उसका हुसैन इबने अली ताजदार है

तेग़ोसनाँ पे नाज़ है ऐ क़ुफ़ियो तुम्हें
लेकिन न भूलो ये कि इधर ज़ुलफ़िक़ार है

बोले हुसैन लाशाए अकबर को देख कर
शायद यही मशीयते परवरदगार है

असग़र अली का शौक़े शहादत तो देखिए
कितना मचल रहा है गो ये शीरख़्वार है

ज़ैनब की बेबसी का ये आलम यज़ीदियो
बिखरे हुए हैं बाल रिदा तार तार है

सच पूछिये तो ख़ून शहे करबला पे दोस्त
अफ़सानाए हयात का दारोमदार है

ऐ 'नूर' कर न फ़िकरे अमल ये भी कम नहीं
तू शह के नाम पर जो यहाँ अशकबार है

सलाम

32

6-2-74

दिया सर शाह ने रण में शहादत इसको कहते हैं
किया सजदा तहे ख़ंज्जर इबादत इसको कहते हैं

उदू के हक़ में भी करना दुआँए काम था शह का
इसे कहते हैं अज़मत आदमोयत इसको कहते हैं

वो करबल जो बहत्तर आशिक़ाने हक़ का मदफ़न है
ज़्यारतगाहे आलम है फ़ज़ीलत इसको कहते हैं

लुटा घर बार, बच्चे कट गए ख़ुद मिट गए सरवर
क़्यामत और क्या होगी क़्यामत इसको कहते हैं

सरे शह नेज़े पर हैं लशकरे कुफ़्फ़ार पीछे है
इमामत ऐसे होती है इमामत इसको कहते हैं

इसे सींचा है 'नूर' आले नबी ने ख़ून से अपने
नहीं करबोबला ये बाग़े जन्नत इसको कहते हैं

सलाम

33 5-12-78

लिया दे के सर मरतबा सरवरी का
ये था काम शाहे उमम आप ही का

यही था सबब शाह की बरतरी का
उदू से भी रखते थे रुख दोसती का

दुआ दो शहीदाने करबोबला को
ये इसलाम मिट जाता वरना कभी का

लुटाते थे हर ग़म में तसकीं को दौलत
न सानी हुआ शाह जैसे सख़ी का

मिटे मिसले हरफ़े-ग़लत सब यज़ीदी
रहा नाम दुनिया में इबने अली का

कहाँ मैं कहाँ ये सलामे मुबारक
ये सब फ़ैज़ है 'नूर' अब्र अहसनी का

सलाम

34

31-12-78

घर घर है ये जो ज़िक्रे-मुकर्रर हुसैन का
गोया हर एहले दीं का है दिल, घर हुसैन का

बरबाद हो के रह गया गो घर हुसैन का
बातिल के सामने न झुका सर हुसैन का

कोई कली तो कोई गुलेतर हुसैन का
जैसे हो गुलसिता कोई लशकर हुसैन का

नहरे फ़ुरात रोक लो बेशक यजीदियो
तसनीम है हुसैन की कौसर हुसैन का

इतरत नबी की यूं तो थी हर एक लाडली
लेकिन हर इक से बढ़ के था नम्बर हुसैन का

बखशे न जाओगे कभी ऐ हाजियो अगर
देखा न तुम ने रौज़ाए अनवर हुसैन का

ये क्या है 'नूर' फ़ैज़े शहादत नहीं अगर
चरचा ब-ऐहतराम है घर घर हुसैन का

सलाम

35 10-10-79

फ़र्श से ता ब समक ग़ुल ये हुआ हो जैसे
ग़मे शब्बीर ग़मे दह्र बना हो जैसे

हुर को आते ही मिली शह से मुहब्बत ऐसा
ख़ुद को समझा कि यक अज़ आले अबा हो जैसे

शाने अब्बास ने कटवा के किया ये साबित
एक सक्क़ाए हरम जाने वफ़ा हो जैसे

ख़ुद से ये बोला यज़ीद आज धड़कता है दिल
मेरे आँमाल कोई देख रहा हो जैसे

इक जहाँ सजदे यहाँ करता चला आया है
अरसाए करबोबला क़िबला नुमा हो जसे

अपनी आँखों से बसद शोक़ लगाते हैं तमाम
करबला ख़ाक तिरी ख़ाके शिफ़ा हो जैसे

बज़्म सब महवे ग़मे शाह नज़र आती हैं
'नूरे' दिलख़स्ता यहाँ नौहासरा हो जैसे

भजन

घनश्याम की मुसकान का अन्दाज़ तो देखो
जादू है कि टौना कोई आवाज़ तो देखो

गीता का हरइक लफ़्ज़ चमकता है फलक पर
रौशन है दो आलम ज़रा ऐजाज़ तो देखो

जो इसकी धुनें सुनता है हो जाता है बेख़ुद
इक बाँस की पोरी का बना साज़ तो देखो

हर ज्ञान की पुस्तक से सिवा इसका मनन है
गीता ने जो पाया है वो ऐज़ाज़ तो देखो

कम उम्र में शहज़ोर संघारे कृष्ण ने
लगता है जो चिड़िया सा वो शहबाज तो देखो

घेरे हुए रहतो हैं जिसे सखियाँ हमेशा
वो कितना है प्यारा बुते-तन्नाज़ तो देखो

हर काम वो ख़ुद करता है गीता में कहा है
इस पर भी है इंसान सरअफ़राज़ तो देखो

जो देता हूँ मैं देता हूँ गीता में कहा है
इंसान की लेकिन ये तगोताज़ तो देखो

गो कृष्ण ने संसार को सौ रंग दिखाए
सरबसता है ऐ 'नूर' मगर राज़ तो देखो